INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 3 | APRIL – 2025

"अवधेश प्रीत की कहानियों में मानवीय चेतना : एक विश्लेषण"

प्राची सिंह[1] , डॉ . ओम प्रकाश द्विवेदी[2]
[1]एम. ए. हिंदी, यूजीसी नेट हिंदी, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (मध्यप्रदेश).
[2]सहायक प्राध्यापक, हिंदी यमुना प्रसाद शास्त्री महाविद्यालय, सिरमौर, रीवा (मध्य प्रदेश)

सारांश -

अवधेश प्रीत आठवें दशक के उन चर्चित कथाकारों में है; जिन्होंने अपनी रचनाओं के मूल में सामान्य जन की समस्याओं को रखा है।उनकी कहानियों को शीर्ष आलोचकों से लेकर सुधी पाठकों तक सभी ने खुले दिल से स्वीकारा और सराहा है। वह अपने दौर के समय और समाज के जरूरी सवालों से टकराते है ,और उनमें मौजूद स्याह सफेद की शिनाख्त करते हुए पाठकों को उन सच्चाइयों तक ले जाते है जो अक्सर छुपी रह जाती है। उनकी कहानियों में आमजन के जीवन,उसके संघर्ष, मध्यम वर्गीय समाज और उनका रहन-सहन,गरीबी,शोषण ,राजनीतिक विद्रूपताएं इत्यादि प्रेमचन्द की यथार्थवादी लेखनीय परंपरा वाला लगता है, तो दूसरी ओर समकालीन कहानियों के बेहद महत्वपूर्ण विषय प्रेम,विवाह ,स्त्री अस्मिता,जातीय मान्यताएं,आधुनिक तकनीकी एवं उसका प्रभाव, अकेलेपन,संत्रास,दुख,व्यक्ति गत अस्तित्व,युवा मन की शंकाएं ,युवाओं के संघर्ष इत्यादि विषयों को बखूबी अपनी लेखनी का आधार बनाया है। जिसको देखकर ये लगता है कि अवधेश प्रीत समकालीन कहानीकारों राजेंद्र यादव, कमलेश्वर,मोहन राकेश एवं जैनेन्द्र की परंपरा में बहुत मजबूती से शामिल हैं।

अवधेश प्रीत की कहानियां जितनी पठनीय होती है उतनी मंचीय भी। यही कारण है कि उनकी अनेक कहानियों को देश की कई रंग संस्थाओं ने नाट्य मंचन किया है।अपनी पठनीयता और दृश्यात्मकता के संयोग से प्रीत जी की कहानियां पाठकों के मन में विशेष छाप छोड़ती है। अवधेश प्रीत जी की कहानियों में कहानीकार और पत्रकार दोनों के ही गुण पाठकों के सामने आते है।

मुख्य शब्द- संबंध विच्छेद, मानवीयता, प्रेम असमानता,राजनीति,समाज ।

प्रस्तावना -

साहित्य ,मानव जीवन को सरस बनाता है,वह समाज में नैतिकता एवं आदर्श की स्थापना करता है।वह मनुष्य की चेतना ,उसके भावों की जीवित रखने की संजीवनी की तरह होता हैं।अवधेश प्रीत का साहित्य भी मनुष्य के सहज भावों को अभिव्यक्ति देने वाली संजीवनी की तरह है ;जो अपने आसपास के वातावरण, स्थितियों परिस्थितियों में दिखाई देता है। जो उनके संवेदनशीलता के गुण के कारण लिखने को प्रोत्साहित करता है।डॉ.नगेंद्र के अनुसार "इस दौर का नया कहानीकार देश और काल में फैलने के साथ गहराई में उतर पड़ा,उसने अपनी जटाओं में नई गंगा उतारने का शिव साहस जुटाया। दिन प्रतिदिन के अनुभव उसकी रचनात्मकता में इतने जीवंत और अर्थवान हो उठे कि ज्वलंत प्रश्नों और समस्याओं ने बेचैनी के साथ उसके युवा रक्त को खौला दिया। इसी भीतरी तड़फड़ाहट,आक्रोश,छटपटाहट, और आग ने आठवें दशक के रचनाकार को मात्र माध्यम बना कर दम लिया।"(1)

अवधेश प्रीत की कहानियां भी इन्हीं सारी विसंगतियों को समाज के सामने लाने की कोशिश करती है। शख्सियत में लेखक स्वयं कहते है कि "मै कथा या कहानी सोच कर नहीं लिखता हूं,जो स्थिति परिस्थिति,घटनाएं ,परिवेश आसपास की होती है ,जो मुझे हांट करती है और जो मुझे लगता है कि यह विषय दूसरे तरीके से देखा जा सकता है और घटना के पीछे कोई और सत्य दृष्टि हो सकती है,उनको अपनी लेखनी में चयनित कर लेता हूं।"(2)

अवधेश प्रीत पहले पत्रकार रहे है ,उन्होंने पाटिल पुत्र और दैनिक हिंदुस्तानमें लंबे वक्त तक पत्रकारिता की है। उनकी पत्रकारिता की खोजी सूक्ष्म दृष्टि,चिंतन एवं उसका विश्लेषण उनके साहित्य में भी दिखाई देता है।समाज में व्याप्त मानवीय शोषण, अत्याचार,छीना झपटी, स्वार्थपरता , हिंसा,गरीबी,भूख आदि जो मानवता को नष्ट कर रही है ऐसे विषयों से लेखक आहत होकर समाज के आगे रखने का वीणा उठाए दिखाई पड़ता है।

विश्लेषण -

अवधेश प्रीत मूलतः आम आदमी के सामाजिक मूल्यों,उसकी समस्याओं के लेखक है। उनकी प्रथम कहानी कांता(1977) में उत्तराखंड की एक पत्रिका में छपी थी, उसमें बंगाल के रिफ्यूजियो की समस्या का बेहद मर्मस्पर्शी चिंतन दृष्टि देखने को मिलती है। मानवता का ह्रास भी इस कहानी में जगह जगह देखने को मिलता है। अवधेश प्रीत की कहानियों में जो बेबाकीपन और कहने की शैली में विशिष्टता दिखाई पड़ती है;वह बहुत ही कम लेखकों में दिखाई पड़ती हैं। इसी क्रम में लेखक की कहानी "कजरी" में हम देखते है कि यहां पर हिंदू मुस्लिम भेदभाव, पशु और इंसान का प्रेम,अस्पतालों की मनमानी और पुलिस की अकर्मण्यता को समेटे हुए ये कहानी अपनी यात्रा से समाज में फैले दुराचार को सामने रखती हुई चलती है। कजरी में लेखक फजलू मियां के द्वारा आम जनता के तकलीफ के बारे में बताते है और कहते है

"हम गरीब आदमी है, हुजूर। फूटी कौड़ी भी पास न है। सोचा, सरकारी अस्पताल में हमरी कजरी का मुफ्त इलाज हो जाएगा।"(3)) लेखक कहानी में एक जगह और जनता की दयनीय स्थिति वर्णन करते हुए कहते हैं " सुबह होते न होते पशु अस्पताल के गेट पर दो लाशे पड़ी मिली। एक गाय की ,दूसरी इंसान की। गाय का नाम कजरी था। इंसान का नाम फजलू। लेकिन दोनों की शिनाख्त करनेवाला कोई नहीं था।" (4) इस कहानी के संदर्भ में विश्वनाथ प्रसाद त्रिपाठी ने अपनी व्यक्तिगत अभिव्यक्ति देते हुए कहते है कि "यह कहानी प्रेमचन्द के रंग ढंग की अद्भुतकहानी है।" अवधेश प्रीत जी ने अपनी कहानियों के माध्यम से समाज के हर वर्ग,समाज की गतिविधि और समस्या को अपनी लेखनी के माध्यम पाठकों तक पहुंचने में सफल हुए हैं।इसी क्रम में लेखक की एक और कहानी जो मानवता को खोने का सबूत बनती दिखाई देती है कहानी है "नृशंस" जिसका

अर्थ ही जघन्य, अपराध है।इस कहानी में सी के भगत है ,जो इसका जीवंत उदाहरण है। इस कहानी में सत्ता की मौन सहमति और साथ , और अस्पतालों की लापरवाही से कैसे निर्दोषों की जान चली जाती है, और जो आवाज उठाता है उसी निरपराधी को फैसला सुना कर उसी दलदल में फंसाया जाता है। यह सब दिखाया गया है । इस कहानी में लेखक विजय के माध्यम से सी के भगत से कहते है “मै तुम्हारी भावनाओं की कद्र करता हूं, मै मानता हूं कि तुम जो कह रहे हो उसमें कही ज्यादा आकर्षण, जिंदगी कही ज्यादा सुविधाजनक हो सकती है लेकिन गरीबी, भूख, अन्याय, दमन, अत्याचार, मनुष्य का अपमान यह सब देखकर मै बेचैन हो उठता हूं ,गहरे तक आहत ओर अपराध बोध से भर जाता हूं, मुझे लगता है मै इस मशीनरी का पुर्जा नहीं बन सकता।”(5) इस कहानी के माध्यम से लेखक बताना चाहते है कि समाज में भ्रष्टाचार इतना विस्तृत रूप ले रहा हैं और मानवता का पतन होता जा रहा है। जिसे बचाने की जरूरत है।

नई कहानी में मानवीय संबंध विच्छेद के विषय में डॉ नगेंद्र का कथन है कि “समसामयिक कहानीकार जीवन के नए संदर्भों, संबंधों के बदलाव को वर्णनात्मकता के झाड़ू से बटोर कर नहीं दिखलाता, बल्कि संबंधों को प्रतीकों बिंबों में सतर्कता से परिभाषित करता है।”(6)इस आधार पर अवधेश प्रीत जी की कहानी “ब्रेकअप” बहुत ही प्रासंगिक है जिसमें वर्तमान समाज के बेहद जरूरी और तनाव उत्पन्न करने वाले विषय को लेखक उठाते हैं ,कहानी के केंद्र में शिखा और अमन दो युवा वर्ग है, जो प्रेमी युगल के रूप में कहानी में आते हैं, लेकिन जब प्रणय संबंध में एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति पर हावी हो जाता है;अधिकार बोध से पीड़ित हो जाता है ,तो प्रेम जल्द ही समाप्त होने लगता है। और व्यक्ति तनाव से जूझने लगता है, इसी कारण संबंध विच्छेद हो जाते है। यहां लेखक शिखा के माध्यम से आज के युवा वर्ग के प्रेम की झलक दिखाते है“ उसे इतनी सी बात क्यों नहीं समझ आई कि प्यार बराबरी का रिश्ता है। न कम,न ज्यादा। मानती हूं, हर लड़का अमन जैसा नहीं होता, लेकिन हर लड़का रोहन जैसा भी कहां होता है? ये सच भी तुमसे मिले बगैर कहां जान पाती? थैंक्यू रोहन!”(7)इस कहानी की नायिका आधुनिकत मनोभावों से ग्रस्त है ,जो अपने रिश्ते में तुलना का सहारा लेकर चलती दिखती है।अवधेश प्रीत की कहानियां यथार्थ से जोड़ती हुई चलती है उनको पढ़कर ऐसा लगता है कि यही सारी समस्याओं से समाज जूझ रहा है। और इससे निकलने का रास्ता भी बनाना पड़ेगा । अवधेश प्रीत ज्वलंत सामाजिक मुद्दों के संवेदनशील कथाकार के रूप में जाने जाते है।

नई कहानी में राजनीतिकता,सामाजिकता के संबंध में डॉ नगेंद्र का कथन है “नई कहानी का व्यक्तिवादी पीड़ावादी रुझान सामाजिक राजनीतिक संघर्ष के आड़े आता था, और मजेदार बात यह है कि बदलते परिवेश में यह संघर्ष और तेज हो रहा था। राजनीतिक दलों के कार्यक्रमों की लाभभरी अवसरवादिता,मक्कारी,धोखेबाजी और फार्मूलाबद्ध तैयारी में सिद्धांतहीनता एवं सरलीकरण साफ दिखाई देता है।इन सभी पार्टियों का एक सूत्री कार्यक्रम है सत्ता को हथियाना। इन्हें जनसेवा और त्याग, सुरक्षा से कोई सरोकार नहीं होता।” (8)इसी तरह के संदेश को लिए हुए अवधेश प्रीत की कहानी “सांड” है,सांड कहानी राजनैतिक विसंगतिबोध की कहानी है,जिसके माध्यम से लेखक बताना चाहते है कि मूल समस्या का वास्तविक हल न ढूंढ कर राजनेताओं के द्वारा एक नई समस्या पैदा कर दी जाती है, जिससे कि मूल समस्या तो बनी रहती है, उसके समांतर नई समस्या का उदय हो जाता हैं।लेखक यहां वर्तमान समय के नेताओं का परिचय देते हुए कहते हैं कि “ राज्य सरकार ने सांडों के आतंक से मुक्ति दिलाने के लिये `सांड समस्या व समाधान योजना`की मंजूरी दे दी है। इस योजना के तहत सांडों का लिंग परिवर्तन कर,उन्हें गाय बनाने का राज्यव्यापी अभियान चलाया जाएगा। सांडो की अनुपयोगी प्रजाति को उत्पादक प्रजाति में तब्दील करने की शुरुआत करने वाला यह देश का पहला राज्य होगा।”(9) इस कहानी के माध्यम से

लेखक बताना चाहते है कि चुनाव को जीतने के लिए सरकार ऐसी कितनी बेतुकी योजना का निर्माण करती हैं, और मनगढ़ंत बातें करते रहते हैं जिसका कोई मतलब नहीं रहता। और भोली भाली जनता इसका शिकार बनती रहती है। " राज्य की जनता को मुख्यमंत्री जी पर भरोसा है और मुख्यमंत्री जी जनता की उम्मीदों पर खरे उतरेंगे `सांड बनाम गाय ` की बहस जारी है राज्य की जनता को पूरा विश्वास है कि मुख्यमंत्री जी यह चमत्कार करके दिखाएंगे।"(10)इन्हीं शब्दों से कहानी अपने अंतिम चरण पर पहुंच जाती है।अतः राजनीति स्वयं में एक=समाधान न बनकर और समस्या को जन्म देने वाली बन जाती है । और वर्तमान परिदृश्य को इस कहानी के माध्यम से और नजदीक से समझने की चेतना प्रीत जी पाठकों को देते है ।

इसी क्रम में अवधेश प्रीत की एक और कहानी "अथ कथा बजरंगबली" में सरकार की जो कानून व्यवस्था है उस पर तीखा व्यंग्य किया गया है। कहानी में बजरंगबली की मूर्ति का चोरी होना और फिर पुलिस को मिलना,लेकिन मूर्ति का पुलिस स्टेशन से मंदिर का सफर इतना कठिन हो जाता है, इतने नियम ,कानून पढ़ाए जाते है कि वह मूर्ति कभी मंदिर तक पहुंच ही नहीं पाती। ये हमारे देश की कानून व्यवस्था के नियम पर व्यंग्य करती हुई दिखाई देती है। आज कानूनी व्यवस्था आमजन के लिए बहुत दुष्कर हो गयी है। इस कहानी के माध्यम से लेखक बताना चाहते है कि जब भगवान को इस कानून व्यवस्था,नियमों,मुकदमों ने भी छोड़ा तो आम जनता की बात ही छोड़े। लेखक बजरंग बिहारी तिवारी से कहलवाते है कि " अफसोस सिर्फ इतना है कि बजरंग बली की प्रतिमा का उद्धार न करवा सका,होइए वही जो राम रची राखा,।"(11) कह कर भगवान भरोसे छोड़ दिया।इस समाज में मानवता का स्त्रोत खत्म सा हो गया है। भगवान भी अब कानून के नियमों, मुकदमों से बधा हुआ है। अवधेश प्रीत समाज के ऐसे ही ज्वलंत पहलुओं को अपनी लेखनी के माध्यम से पाठकों को अवगत कराते है।

निष्कर्ष –

अवधेश प्रीत मूलतः मानवीय चेतना और मनुष्यता के कथाकार हैं । उनकी कहानी मानुषिक योग्यताओं को विकसित करने की प्रेरणा देती है। हिंदू मुस्लिम एकता, आपसी भाईचारा, मानवीय मूल्य, सामाजिक समस्या, से लेकर व्यक्ति के निजता,उसके प्रेम प्रसंग, बदलते सामाजिक संबंध और दाम्पत्य जीवन की सच्चाइयों तक सभी कुछ के बारे में बड़ी सूक्ष्मता के साथ प्रस्तुत करते हैं । चूंकि वो एक महनीय पत्रकार भी है ,इसीलिए इस तरह का विवेचन और विश्लेषण उनके लिए सहजता को लिए रहता है । इस प्रकार से हम कह सकते है कि की अवधेश प्रीत वर्तमान दौर के बेहद संजीदा कथाकार हैं, जिनके लेखनी में प्रेमचंद की सी भावुकता और यथार्थ भी है, तो निर्मल वर्मा जैसे संबंधों का गहराई से विश्लेषण और उसका चिंतनीय पक्ष भी । प्रीत जी एक सामाजिक कथाकार हैं और इनकी रचनाओं में मानवीय चेतना और उसका बेवाक विश्लेषण जगह जगह दिखाई देता है, जो हिंदी पाठकों को एक नवीन जीवन दृष्टि और सामाजिक बोध को जन्म देने में सक्षम बनाता है ।

संदर्भ -

1. डॉ नगेंद्र - हिंदी साहित्य का इतिहास (पृष्ठ 736)
2. अवधेश प्रीत का साक्षात्कार (शख्सियत)
3. अवधेश प्रीत - कजरी कहानी, अथ कथा बजरंगबली (पृष्ठ 38)
4. अवधेश प्रीत - कजरी कहानी, अथ कथा बजरंगबली (पृष्ठ 38)
5. अवधेश प्रीत - नृशंस कहानी(पृष्ठ 86)
6. डॉ नगेंद्र - हिंदी साहित्य का इतिहास (पृष्ठ738)

7. अवधेश प्रीत - ब्रेकअप कहानी, अथ कथा बजरंगबली (पृष्ठ 115)

8. डॉ नगेंद्र - हिंदी साहित्य का इतिहास (पृष्ठ 740)

9. अवधेश प्रीत - सांड कहानी,अथ कथा बजरंगबली (पृष्ठ 159)

10. अवधेश प्रीत - सांड कहानी,अथ कथा बजरंगबली (पृष्ठ 160)

11. अवधेश प्रीत - अथ कथा बजरंगबली (पृष्ठ 83)